Q. Discuss the Defects of Vienna Congress?
विएना कॉंग्रेस के दोषों पर प्रकाश डालें?

Ans:- "नैतिक व्यवस्था का पुनर्निर्माण, यूरोप की राजनीतिक व्यवस्था की पुनः स्थापना" राजनीतिक शक्ति के न्यायोचित पुनर्विभाजन पर आधारित स्थायी शांति" आदि महान उद्देश्य एवं आदर्शों की घोषणाओं के साथ विएना कॉंग्रेस का प्रारंभ हुआ था। यूरोप की जनता को इस सम्मेलन से बहुत आशायें थी, किंतु कांग्रेस के निर्णयों ने सभी को निराश किया। इसी कारण विएना कांग्रेस की कड़ आलोचना की गई है। विएना कॉंग्रेस के निर्णयों में निम्नलिखित प्रमुख दोष थे:-

(1) राष्ट्रीय भावनाओं की पूर्ण उपेक्षा:- विएना कॉंग्रेस की आलोचना किये जाने का प्रमुख कारण इसके द्वारा राष्ट्रीयता की भावनाओं की उपेक्षा किया जाना था। विएना के प्रतिनिधियों ने अपनी इच्छानुसार यूरोप की पुनर्व्यवस्था की, मानो वह उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हो। बेल्जियम एवं हॉलैण्ड, जो भाषा, धर्म एवं संस्कृति, प्रत्येक दृष्टि से पूर्णतया भिन्न थे, उनको फ्रांस की महत्वकांक्षाओं को रोकने के लिए एक कर दिया गया। इसी प्रकार नार्वे को डेनमार्क से छीन-कर स्वीडन को दे दिया गया। पोलैण्ड को भी विभाजित कर उसकी राष्ट्रीय भावनाओं पर कुठाराघात किया गया। इटली को तो मात्र एक भौगोलिक अभिव्यक्ति के रूप में परिणत कर के उसके एकीकरण की सम्भावनाओं पर चोट की गई। केटेल्बी ने विएना कॉंग्रेस की आलोचना करते हुए लिखा है कि "उन्होंने केवल शक्ति-संतुलन के आधार पर राष्ट्रीय सीमाओं को निर्धारित किया, किंतु उन्होंने यह प्रयत्न नहीं किया कि राष्ट्रीयता के आधार पर उनके प्रदेश मिल जायें। परम्परागत कूटनीति पुराने राजवंश और पुराने राज्यों को यथा शक्ति में रखना उन्होंने अधिक उचित समझा; किंतु राज्यों के पुनर्गठन में उन्होंने लोकमत अथवा राष्ट्रीय भावनाओं को कोई महत्व नहीं दिया।" हेजन ने भी इस नीति की कड़ी आलोचना की है। हेजन के शब्दों में, "विएना सम्मेलन अभिजातवर्गीय लोगों का सम्मेलन था, वे

लोग राष्ट्रीयता और लोकतंत्र के आदर्शों को समझने में असमर्थ थे अथवा उनसे घृणा करते थे।"

(2) प्रतिक्रियावाद का प्रभुत्व :— वियना कांग्रेस मैटरनिख की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी मैटरनिख घोर प्रतिक्रियावादी व्यक्ति था, अतः इस कांग्रेस के निर्णयों पर प्रतिक्रियावाद का प्रभाव होना स्वाभाविक ही था। अतः इस कांग्रेस के निर्णयों पर प्रतिक्रियावाद का प्रभाव होना स्वाभाविक ही था। कैसलरे के उपस्थित रहने के कारण यद्यपि प्रतिक्रियावादी एवं प्रतिशोधात्मक नीति पूर्णतया तो मैटरनिख न अपना सका, किन्तु फिर भी इसके निर्णयों पर प्रतिक्रियावादी शक्तियों की अमिट छाप थी। कांग्रेस का विचार था कि स्थायी शान्ति ~~घोषित~~ प्राचीन राजवंशों की पुनः स्थापना से ही सम्भव थी, तर्कहीन एवं प्रतिक्रियावादी था। इटली को छोटे - छोटे राज्यों में विभाजित कर उन्हें आस्ट्रिया के संरक्षण में देना प्रतिक्रियावादी का दूसरा उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रकार पुरातन एवं नवीन ~~आदर्शों~~ विचारों के संघर्ष को वियना कांग्रेस समाप्त करने में असफल रही।

(3) जन एवं क्रान्तिकारी भावनाओं की अवहेलना :— वियना कांग्रेस की एक गलती ~~यह~~ यह भी थी कि उसमें क्रान्तिकारी एवं जनता की इच्छाओं की ओर कोई ध्यान न दिया। जनता के साथ जिन्होंने शिशुवत व्यवहार किया, जो अपने भाग्य का निर्णय स्वयं करने में असमर्थ होते हैं तथा जिन्हें अनुभवहीनता तथा अपरिपक्वता के कारण अपनी बात कहने का अधिकार नहीं होता। उनका विचार था कि ईश्वर ने उनको इसलिए नियुक्त व अभिषिक्त किया है कि वे विश्व को अपने संरक्षण में रख सकें और अपनी बुद्धि और अनुभव के अनुसार उनके जीवन संचालन करें। वियना कांग्रेस ने फ्रांस की क्रान्ति से उत्पन्न स्वतन्त्रता, समानता व भ्रातृत्व के सिद्धान्तों का भी अवहेलना की, जो कि दिन - प्रतिदिन प्रबल होते जा

रहे थे जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था तथा कालान्तर में जो विश्व पर हावी गए। केटलबी ने इन विषय में लिखा है "इस प्रकार उन्होंने (विएना कांग्रेस के प्रतिनिधियों) प्रतिशील सामाजिक विचारधाराओं के विकास कार्य किया। इसी कारण शताब्दी के समाप्त होने के पहले ही उनके निर्णय व्यर्थ निर्णय निरर्थक हो गए।"

(iv) अन्य दोष — इनके अतिरिक्त भी विएना कांग्रेस ने अनेक भूलें की। यूरोप में अशान्ति फैलाने का मुख्य उत्तरदायित्व फ्रांस पर था, किन्तु इस कांग्रेस से वास्तविक हानि फ्रांस को नहीं वरन् छोटे राज्यों को हुई जिनके हितों पर तुषारापात किया गया। कांग्रेस के पक्षपातपूर्ण नीति अपनाते हुए कुछ राज्यों को वंशगत कारणों से अधिक भू-भाग दिया तथा कुछ को दिए गए वचनों को भी याद न रखा, जैसा कि हैनोवर, डार्मस्टट व इटली के कुछ राज्यों के साथ किया गया। जिनोवा को स्वतन्त्र करने का वचन देकर भी सार्डीनिया के अधीन करना कांग्रेस की पक्षपातपूर्ण नीति का द्योतक है। इसके अतिरिक्त विएना कांग्रेस ने अनेक कार्यों को अपूर्ण छोड दिया। उदाहरणार्थ, यूरोप में स्थायी शान्ती स्थापित करने के उद्देश्य से सात राज्यों ने 'कांग्रेस के अन्तिम अधिनियम' पर हस्ताक्षर किए थे तथा एक 'गारण्टी की सन्धि' जिसका कैसलरे ने प्रस्ताव रखा था, जो कभी कार्यान्वित न किया जा सका। पूर्वी समस्या आदी की ओर भी विएना कांग्रेस ने कोई ध्यान न दिया। इसी प्रकार मोडेना एवं टस्कनी में हैप्सबर्ग वंश की स्थापना की गयी, जो कि अत्यन्त अत्याचारी एवं प्रतिक्रियावादी वंश था।

अतः स्पष्ट है कि विएना कांग्रेस के निर्णयों में अनेक दोष निहित थे। यही कारण था कि विएना कांग्रेस के निर्णय अधिक समय तक कायम न रह सके। 1830 ई० तक विएना कांग्रेस की व्यवस्थाएं चलती रही, परन्तु 1830 ई०

में फ्रांस में पुनः क्रान्ति हो गयी जिसने प्रबल प्रतिक्रियावादी मैटरनिख की शक्ति की नींव हिला दी। धीरे-धीरे यूरोप के राष्ट्रों में राजनीतिक चेतना का आविर्भाव हुआ, परिणामस्वरूप विएना कांग्रेस की व्यवस्था धीरे-धीरे भंग होने लगी। हॉलैण्ड व बेल्जियम मात्र 15 वर्ष तथा स्वीडन व नार्वे 10 वर्ष पश्चात् ही अलग-अलग हो गए। इटली और जर्मनी भी 1870 ई० में स्वतन्त्र एवं एकीकृत राष्ट्रों में परिणत हो गए। विएना कांग्रेस के निर्णयों के असफल होने का प्रमुख कारण यह था कि उसने नवीन सिद्धान्तों की अवहेलना की तथा प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त को अपनाया। इसने इतनी समस्याएं हल नहीं की जितनी उत्पन्न कर दीं। यही कारण है कि विएना कांग्रेस की आलोचना करते हुए हेजन ने लिखा है "1815 ई० से अब तक का यूरोप का इतिहास विएना सम्मेलन की भारी भूलों को संशोधित करने का इतिहास है।"